Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 | Impact Factor - 7.139 | Indexed (SJIF)

March 2020 Special Issue – 28, Vol. 7

Relevance of Mahatma Gandhi in Today's World

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editors
Guide
Dr. S. G. Gaikwad
Principal
Shivaji College, Hingoli (MS)

Editor
Dr. Balasaheb S. Kshirsagar
...ctor, Gandhian Studies Center
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor
Dr. Wagh S.G.
Dept. of Hindi
Shivaji College, Hingoli (MS)

Scanned with CamScann
Scanned with OKEN Scanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 7.139 Special Issue -28 , Vol. 7 March 2020 ISSN- 2319 8648 Peer Reviewed

Index

1. 21 वी सदी में गांधी विचारधारा की प्रासंगिकता — 1
डॉ. मुकेश वराघा
2. गांधीजी के सामाजिक न्याय की परिकल्पना — 4
प्रा.डॉ.संजय गणपती मालेराव
3. म.गांधीजी के सत्य और अहिंसा संबंधी विचार — 7
प्रा.डॉ.रमेश वि.मोरे
4. हिंदी साहित्य और गांधीवाद — 9
डॉ पक्षित बन्ने
5. महात्मा गांधीजी के आर्थिक एवं विभिन्न विचारोंके दर्शन — 12
श्रीमती प्रा. डॉ. माधव मिनाक्षी भास्कर
6. महात्मा गांधी की आत्मकथा "सत्य के प्रयोग" में विद्यार्थी जीवन — 15
प्रा. डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
7. महात्मा गांधी की सहिष्णुता — 17
डो. शंकर रामभाऊ पजई
8. माहात्मा गांधीजी के आर्थिक और सामाजीक विचार — 19
वाळवंटे राजकुमार अर्जुन
9. युग पुरुष महात्मा गांधी और स्वतंत्रता आंदोलन — 22
(बापू एकांकी के विशेष संदर्भ मे)
डॉ कस्तो धीरज जनार्दन
10. गांधीवाद के राजनीतिक आयाम — 24
प्रा. अतुल नारायण खोटे
11. महात्मा गांधीजी की ग्राम स्वराज्य की अवधारणा कि ग्रामिण विकास मे भुमिका — 27
विकास बसराम आढे , तुकाराम व्ही आढे
12. गांधीवाद एक चर्चा — 31
डो मा.ना.गायकवाड
13 गांधीवाद और नई रोशनी — 34
माधवराव गजाननराव जोशी
14. महात्मा गांधीजी की पंचायत राज अवधारणा, संवैधानिक स्थिती एवं आज — 38
प्रा.डॉ डि.ए. पाईकराव , प्रा.डॉ एस.एम. आकाशे
15 महात्मा गांधी और राष्ट्रीय एकात्मता — 41
प्रा. सुनिल एम. कांबळे
16. महात्मा गांधीजी के आर्थिक एवं विभिन्न विचारोंके दर्शन — 45
श्रीमती प्रा. डॉ. माधव मिनाक्षी भास्कर

Scanned with OKEN Scanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 28, Vol. 7 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648

March 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

महात्मा गांधीजी के आर्थिक एवं विभिन्न विचारोंके दर्शन

डोंगरे प्रा. डॉ. जाधव विभाश्री भास्कर

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, शि.म. ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय, कळंब, ता. कळंब, जि. उस्मानाबाद

प्रस्तावना :

"सर्वेपि सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:खमाप्नुयात ।।"

इसका अर्थ सबका उदय, सबका उत्कर्ष, सबका विकास, सबका सुख है। गांधीजीने इसी सर्वोदय को अपने आर्थिक दर्शन का आधार बनाया। गांधीजी के आर्थिक विचार सत्य, अहिंसा, श्रम एवं प्रतिष्ठा इस तत्वपर आधारित है। उनके विचार व्यवहारवादी थे। जब पूंजीवादी समाज में राज सत्ता, धन सत्ता, विज्ञान और यंत्र का इस्तेमाल करने के बाद ऐसे समाज की स्थापना नहीं हो सकी, जिसमें सभी सुखी हो सके हो। तब कार्ल मार्क्स एक क्रांतिकारी संदेश लेकर आया। उसने साम्यवादी समाज की स्थापना की बात कही, 'जिसमें न कोई गरीब रहेगा और न ही कोई अमीर। समाजवादी अर्थशास्त्र में मेहनत जिसकी संपत्ती उसकी' का नारा दिया गया।

मार्क्स ने इससे बढ़कर एक और सूत्र दिया, 'मेहनत हर एक की, संपत्ती सबकी' यहीं से कल्याणकारी अर्थशास्त्र का उदय हुआ। लेकिन सामाजिक जीवन की विकट समस्या का निराकरण नहीं हो सका है। क्रांतियाँ तो हुई, परंतु मानव सफल नहीं हो सका। यहीं सर्वोदय सफल करने में समर्थ है। सर्वोदय का लक्ष्य है आध्यात्मिक उन्नती एवं जीवन शुद्धि। इसमें संपूर्ण विश्व और प्राणी का ध्यान रखा गया है। गांधीजी सर्वोदय अर्थशास्त्र को नीतिशास्त्र और धर्मशास्त्र से अलग मानते थे।

आज गांधीजी का आर्थिक और सामाजिक चिंतन मानव को सुखी, स्वास्थ्य और संपन्न, शोषणमुक्त बनाने और सद्भावना, विवेक, सर्वधर्मसमभाव आदि मानवीय मूल्य की ओर निश्चित रूप से ले जा रहा है। इसी भावना से मैंने गांधीजी के विचार को व्यवहार और आचरण इन संशोधन शोधपत्र में वैज्ञानिक चिंतन के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

शोध प्रपत्र के उद्देश :

6. गांधीजी के आर्थिक दर्शन के बारे में जानकारी लेना।
7. गांधीजी की सर्वोदय अर्थनिती के बारे में जानकारी लेना।
8. गांधीजी ने जो संदेश दिया वे ग्रामस्वराज्य, सर्वोदय, ग्रामजीवन, सामाजिक मूल्य, इस विषय का सर्वांगिण रूप में अध्ययन करना।
9. गांधीजी के शिक्षा और स्वास्थ्य के बारे में जानकारी लेना।
10. 21 वी सदी में गांधीजी के विचारों की आवश्यकता है, इस विषय का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन पद्धती :

प्रस्तुत शोध अध्ययन का महात्मा गांधी का आर्थिक एवं विभिन्न विचार दर्शन यह विषय है। इस शोध अध्ययन में विभिन्न शोध प्रणालीयों में से परिचयात्मक और वर्णनात्मक शोध अध्ययन पद्धती का इस्तेमाल किया गया है। और तथ्य संकलीत करने के लिए द्वितीय साधनसामग्री का इस्तेमाल किया गया है। इसमें विभिन्न लेखकों के, विद्वानों के ग्रंथों का अध्ययन किया गया है।

गांधीजी के आर्थिक एवं विभिन्न विचारों के दर्शन :

1) समाज का अंतिम व्यक्ति :

गांधीजी ने समाज के अंतिम व्यक्ति से अपना जीवन दर्शन प्रारंभ किया है। समाज का अंतिम व्यक्ति उसे कहा जाता है की, वह व्यक्ति किसी भी वर्ग का हो, जो व्यक्ति अंतिम व्यक्ति से ऊपर है। उसे उन्होंने दूसरा व्यक्ति आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक रूप से जो किसी भी वर्ग का हो, उन्होंने समाज के सबसे दीन हर एक प्रकार से हीन अंतिम व्यक्ति माना है। फिर प्रत्येक अन्य अंतिम व्यक्तियों के उत्थान की बात की। उनका मत यह है कि यदि इस प्रकार का उत्थान होगा तब व्यक्ति के विकास का लक्ष्य बनाकर विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रम प्रारंभ किए। और समाज का उत्थान स्वत: जायेगा।

गांधीजी के आर्थिक विचार अहिंसात्मक मानवीय समाज की अवधारणा से ओतप्रोत है। उनके आर्थिक विचार आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करने वाले एवं भौतिकवाद के विरोधी है। गांधीजी कहते थे की भारत गांव में रहता है। शहरों में नहीं। भौगोलिक रूप से उन्होंने शहर एवं गांव दोनों के उत्थान की बात की, परंतु गांव को प्राथमिकता दी, क्योंकि, गांव अपेक्षाकृत पिछडा है। इसलिए उन्होंने ग्राम स्वराज्य और ग्रामोदय की विचारधारा सामने रखी। क्यों कि गांव के उत्थान का अर्थ है राष्ट्र का उत्थान।

इस प्रकार बहुसंख्यक गरीबों के उत्थान का अर्थ है देश का उत्थान। इसे उन्होंने सर्वोदय अर्थशास्त्र कहा था। इस शोध का मुख्य हेतु हृदय परिवर्तन, स्वावलंबन, स्वशासन के द्वारा एक नए प्रकार की अर्थव्यवस्था का संयोजन करना है। इसमें समाज की कल्पना है। जिसमें सब प्रकार की समता संभव है। इसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति के विकास के लिए स्थान है। भारत अपने जीवन का उत्तम निर्वाह

तभी कर सकता है जब वह अपने प्रयत्न से या दूसरो की मदद लेकर अपनी आवश्यकता की सारी वस्तुएँ अपनी सीमा में उत्पन्न करने लगेगा। इसलिए आज भारत को गाँधीजी के विचारोंकी आवश्यकता है।

2) विनिमय :

गाँधीजी के अनुसार सर्वोदय मे विनिमय का माध्यम आजकल की भाँति मुद्रा न होकर शारीरिक श्रम होगा। आज हर व्यक्ति को हरदिन 4 घंटे शारीरिक श्रम करना अनिवार्य है। आज के अर्थशास्त्र में हम मुद्रा को विनिमय का मापदंड मानते है। पर सर्वोदय अर्थशास्त्र विनिमय मापदंड श्रम को मानते है। क्योंकि मानवश्रम ही वास्तविक संपत्ती है। उसी वस्तु का उत्पादन होता है। इसलिए यही विनिमय का मापदंड भी होना चाहिए।

3) सर्वोदय अर्थशास्त्र के मूल सिद्धांत :

अर्थशास्त्र में प्रारंभ से आज तक काफी परिवर्तन होते आए है। आज संपत्ति, भौतिकता और उपयोगिता पर अधिक जोर दिया जा रहा है। जब की सर्वोदय अर्थशास्त्र इस बात को मानकर चलता है की मनुष्य के सोर उद्देश अहिंसा, सत्य पर आधारित है। समय समय पर परिस्थितीजन्य विकार मनुष्य में आ जाते है। इसलिए सर्वोदय अर्थशास्त्र उन मूलभूत मानवीय गुणों से चलता है जो मनुष्य में है और जिनसे मानवता का सृजन होता है।

सर्वोदय अर्थशास्त्र सर्वांगीण है। यह ऐसा नहीं मानता कि, मनुष्य केवल आर्थिक व्यक्ति है, बल्कि इसका एक समग्र जीवन है और समग्र जीवन ही उसका आचार-विचार चलता है। व्यक्ति और समाज में जो संघर्ष है। सर्वोदय अर्थशास्त्र इसे नहीं मानता। मूल उद्देश है व्यक्ति का विकास, परंतु यह विकास आर्थिक विकास के साथ ही संभव है। व्यक्तित्व जितना ही विकसित होता है आर्थिक विकास उतनी ही तेजी से होगा। समाज उतना ही समृद्ध एवं विकसित होगा। प्रचलित अर्थशास्त्र बौद्धिक श्रम की श्रेष्ठता को स्थापित करता है लेकीन सर्वोदय अर्थशास्त्र में महत्ता शारीरिक श्रम की है। बौद्धिक श्रम के कारण विषमताएँ समाज में पैदा होती है। इसलिए सर्वोदय अर्थशास्त्र श्रमदान एवं श्रमनिष्ट समाज की कल्पना करता है। एक सुदृढ और समृद्धिशील समाज की रचना के लिए यह आवश्यक है।

4) ग्राम्य जीवन एवं व्यक्तिगत विकास :

इस व्यवस्था में ग्रामीण जीवन को अधिक प्रोत्साहन मिलेगा। क्योंकि अन्न, कच्चा माल और मनुष्य की सारी जीवनदायिनी वस्तुओं का उत्पादन गाँव में ही होता है। सारी अर्थव्यवस्था की बुनियाद ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित है। इसलिए ग्रामीण जीवन के पहलुओं आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक का संवर्धन एवं संरक्षण बहुत आवश्यक है। इसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति के विकास के लिए स्थान है। व्यक्ति या व्यक्तित्व जितना ही उंचा होगा, उतना ही समाज उंचा होगा।

5) शिक्षा और स्वास्थ्य :

गांधीजी ने बताया की ज्ञान प्राप्ति का सबको अवसर प्राप्त होगा और वह अपनी शक्ति के अनुसार बौद्धिक शक्ति का विकास कर सकेंगे। विज्ञान का आदर होगा लेकिन विज्ञान का प्रयोग जन-सामान्य के हित में किया जाएगा। प्रत्येक मनुष्य को जिविका चलाने के लिए विज्ञान का लाभ मिलना चाहिए। अपने घर-गाँव के वातावरण में ही उसे शिक्षा देने की प्रकिया सतत जारी रखनी चाहिए। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सभी को प्राप्त हो। विशेषकर प्राकृतिक चिकित्सा भी प्रधानता हो। संतुलित आहार, रसोई घर, व्यक्तिगत व सामाजिक सफाई, वस्त्र, मकान आदि सबको सुलभ हो। इससे समाज और राष्ट्र का उत्थान होगा।

6) समाज परिवर्तन की प्रक्रिया :

गाँधीजी ग्रामसभ्यता को नष्ट नही होने देना चाहते थे। गाँधीजी ने कहा की समाज में अमूल परिवर्तन कर देना क्रांति है। क्रांति का अर्थ व्यापक परिवर्तन से है। इस परिवर्तन में समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मानस, विचार और व्यवहार में परिवर्तन होगा। वास्तविक क्रांति तो यह है जब यह परिवर्तन होगा तभी सारे समाज में परिवर्तन होगा। क्रांति का आधार हिंसा नहीं, अहिंसा होगी। आर्थिक, सामाजिक संबंध, उंच-निच, छोटे-बड़े, मालिक-मजदूर, मॅनेजर मजदूर के न होकर केवल एकसमान मानय संबंध होंगे।

अर्थरचना और राज्यरचना दोनों विकेंद्रीत होंगे। इसका अर्थ है की, समाज का स्वरूप एक पिरॅमिड की भाँति होगा। इससे नया समाज बनेगा उन्नतिशील तथा आर्थिक रूप में विकसनशील होगा।

7) सामाजिक मूल्य :

आज विश्व में जो आर्थिक पद्धती चल रही है, उसका आधार भौतिक मूल्य है। लेकीन सर्वोदय अर्थशास्त्र का लक्ष्य मानवीय मूल्यों को प्राप्त करना है। गाँधीजी भौतिक जीवन में अमूल परिवर्तन चाहते है। व्यक्ति का सर्वोत्कृष्ट विकास और व्यक्ति का सही अर्थ में सामाजिक प्राणी व विवेकपूर्ण प्राणी होना तभी संभव है जब व्यक्ति अपने छोटे-छोटे स्वार्थो से उपर उठे और अपने सुख-दुःख में दूसरों का प्रयास करे। यही गाँधीजी की समाजनिती है।

गाँधीजी कहते थे की, कोई भी अर्थव्यवस्था तभी सर्वोत्तम मानी जाती है जब वह निम्नलिखित लक्ष्य की प्राप्ति करें।

8. उत्पादन में वृद्धी हो।
9. अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिल सके।
10. लोगों के रहन-सहन का स्तर उंचा हो।
11. राष्ट्रीय संपत्ती में वृद्धि हो।
12. किसी प्रकार का आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक और मानसिक शोषण न हो।

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 28, Vol. 7 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
March 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

13. औद्योगिक शांति हो और सभी वर्गों के लोग सुखी और संपन्न हों।
14. अधिक से अधिक व्यक्ति प्रशिक्षित और शिक्षित हों।

निष्कर्ष :

गांधीजी के आर्थिक एवं सामाजिक दर्शन में सर्वोदय अर्थशास्त्र केवल शुद्ध अर्थशास्त्र नहीं है। यह सर्वोदय अर्थशास्त्र समग्र मानव विकास एवं सर्वांगीण है। सर्वोदय अर्थशास्त्र में महत्ता शारीरिक श्रम की है। सर्वोदय अर्थशास्त्र में कोई कार्य छोटा-बड़ा नहीं है। आज की जो पूंजीगत, श्रमगत, व्यवस्थागत भिन्नताएँ है। उन्हें समाप्त किया जाएगा तभी इस देश में सामाजिक, आर्थिक समानता स्थापन होगी।

गांधीजी ने समाज के अंतिम व्यक्ति से अपना जीवन दर्शन प्रारंभ किया है तो उनका यह मत है की, यदि इस प्रकार का उत्थान होगा तब सारे समाज का उत्थान कहा जाएगा। उन्होंने गांव को प्राथमिकता दि है। आज उस प्राथमिकता का आचरण व्यवहार में होने चाहिए। सारी अर्थव्यवस्था की बुनियाद ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित है। इस में ऐसे समाज की कल्पना है। प्रत्येक व्यक्ति के विकास के लिए स्थान है। व्यक्ति का व्यक्तित्व जितना ही ऊंचा होगा उतना ही समाज ऊंचा होगा ही।

समापन :

अंत में उन्होंने भारतीय सभ्यता में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के विवेचन में मानवता को प्रधानता दी गई है। समाजवाद में इस प्रकार की महत्ता निसर्ग दूसरों सपनों हो सके, वह न तो पारिवारिक होगी और न तो व्यक्तिगत होगी। बल्कि सभी संपत्ती राष्ट्रीय संपत्ती होगी। गांधीजी के दर्शन में मानव सभ्यता और संस्कृति के स्रोत है। यही इस दर्शन की अपूर्व देन है। इसलिए आज 21 वी सदी में महात्मा गांधीजी के विभिन्न विचारों की आवश्यकता महत्त्वपूर्ण है।

"महनत जिसकी, संपत्ति उसकी,
काम के मुताबिक दाम।"

संदर्भग्रंथ की यादी :

5. प्रदीप कुमार पाण्डेय, गांधी का आर्थिक एवं सामाजिक चिंतन, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली 110007 द्वारा प्रकाशित 2002।
6. प्रा. सावळुलकर, डॉ. दामजी, आर्थिक विचारांचा इतिहास, विद्या बुक्स पब्लिशर्स औरंगपुरा, औरंगाबाद जून 2011।
7. डॉ. अनिलकुमार वावरे, प्रा. संजय धोंडे, डॉ. अनिल सत्रे, आर्थिक विचारांचा इतिहास, एज्युकेशनल पब्लिशर्स, औरंगपुरा, औरंगाबाद।
8. प्रा. मारभावे, प्रा. पाटील, आर्थिक विचारांचा इतिहास, शारदा प्रकाशन, धर्माबाद, नांदेड।